श्री शांतीनाथ सेवा संस्थान, जैन तिर्थ, संगमनेर

२५७, नवरंग बाग, घुलेवाडी, संगमनेर – ४२२६०५.
मो. नं. : ९३७११०७४३९, ९५१८७८८१००, ७६६६९६२८७२

मानव सेवा, ही ईश्वर सेवा

आप सभी के परिवार जनों को सविनय विनंती करते है, मौन की साधना का उपयोग अपने जीवन में लायेंगे तो अपना जीवन धन्य बनेगा ।

१) जहाँ अपनी ना चले, वहाँ सदैव मौन रहना ।

२) जिससे अपना कोई संबंध ना हो वहाँ सदैव मौन रहना ।

३) जहाँ निंदा का वातावरण जारी हो वहाँ सदैव मौन रहना ।

४) जिसका अपना कोई सहयोग ना हो वहाँ सदैव मौन रहना ।

५) जहाँ विवेक बुद्धि ना हो वहाँ सदैव मौन रहना ।

६) जो किसी से ना समझे उसे वक्त जरुर समझाता है ।

७) इन्सान को Alarm नहीं जिम्मेदारियाँ जगाती है ।

८) खुद से नहीं हारेंगे तो आप हर जगह अवश्य जितेगें ।

९) कर्म के पास न कागज है न किताब है,
लेकिन फिर भी सारे जगत का हिसाब है ।

१०) कैसे नादान है हम दु:ख आता है तो अटक जाते है,
और सुख आता है तो भटक जाते है ।

११) इन्सान को गिरते हुए पत्तों ने यहीं सिखाया है,
बोझ बन जाते हो तो अपने ही गिरा देते है ।

१२) याद रखना हर बात पर जो आपकी 'वाह वाह' करेंगे,
वो ही लोग आपको तबाह करेंगे ।